ओ३म्

पतंजलि विश्वविद्यालय
University of Patanjali

विवरणिका एवं आवेदन-पत्र
Prospectus and Application Form

2013-14

ओ३म्

पतंजलि विश्वविद्यालय
University of Patanjali

विवरणिका एवं आवेदन-पत्र
Prospectus and Application Form

2013-2014

कुलाधिपति का संदेश

भारत सृष्टि के आदिकाल से ही ज्ञान-विज्ञान, साहित्य, संगीत, कला व संस्कृति के क्षेत्रों में विश्व में अग्रणी रहा व है।

एतद्देशप्रसूतस्य सकाशादग्रजन्मनः।
स्वं स्वं चरित्रां शिक्षेरन् पृथिव्यां सर्वमानवाः।। —मनु. 2/20

अर्थात् विश्व के सभी देश भारत में आकर ज्ञान-विज्ञान की दीक्षा लिया करते थे तथा भारत को अपने अध्यात्मिक गुरु व मार्गदर्शक के रूप में स्वीकार करते थे।

18वीं शताब्दी तक भारत शैक्षणिक, आर्थिक, सामाजिक व आध्यात्मिक दृष्टि से विश्व के आदर्श देशों की श्रेणी में रहा है। 18वीं शताब्दी में विश्व बाजार में हमारी 33 प्रतिशत सहभागिता थी तथा विश्व की कुल आय में हमारी सहभागिता 27 प्रतिशत थी। देश में साक्षरता की दर 97 प्रतिशत थी। प्रसिद्ध जर्मन विद्वान मैक्समूलर, अंग्रेज विद्वान जी.डब्ल्यु. लिटनेर एवं तात्कालिक ब्रिटिश सरकार के दस्तावेजों के अनुसार प्राथमिक एवं माध्यमिक स्तर के लगभग 7 लाख 32 हजार गुरुकुल थे। इसके साथ-साथ 14 हजार से अधिक उच्च शिक्षा के केन्द्र थे, जिनमें गणित, नक्षत्र विज्ञान, नक्षत्र भौतिकी, भौतिकी, रसायन, भूगर्भ विज्ञान, धातु विज्ञान, दर्शन शास्त्र, शल्य चिकित्सा व चिकित्सा विज्ञान से लेकर विज्ञान, तकनीकी व प्रबन्ध आदि से संबंधित कम से कम 18 विषय पढ़ाये जाते थे।

अंग्रजों ने भारत को सदियों तक गुलाम बनाने के षड्यन्त्र के तहत हमारी सम्पूर्ण शिक्षा व्यवस्था को नष्ट कर हमारी समृद्ध व गौरवशाली ज्ञानपरम्परा को खण्डित करने का घृणित प्रयास किया। आज देश में हमारे पास लगभग 450 विश्वविद्यालय, 13 लाख प्राथमिक व माध्यमिक विद्यालय तथा लगभग 15 हजार महाविद्यालय है।

विज्ञान, प्रबन्धन व तकनीकी की शिक्षा देने वाले अनेक विश्व प्रसिद्ध शिक्षण संस्थान हैं, परन्तु फिर भी हम अपने शिक्षा संस्थानों में अपने संस्कारों व संस ति को पूरी तरह समाविष्ट नहीं करा पा रहे हैं। हम पतंजलि विश्वविद्यालय के माध्यम से उन्नत शिक्षा के साथ-साथ भारतीय संस्कृति, संस्कार, इतिहास, योग, ध्यान, संयम व सदाचार को शिक्षा का अभिन्न अंग बनाना चाहते हैं। हम शिक्षा का भारतीयकरण या स्वदेशीकरण करना चाहते हैं। हम बच्चों में छुपे महामानव को जागृत कर शिक्षा व संस्कारों से उसका पूर्ण विकास कर, उसे दुनिया का एक सफलतम, श्रेष्ठ एवं आदर्श इंसान बनाना चाहते हैं। हमारे संस्थान के स्नातक गुरु-आश्रम से जाकर किसी अन्य की दया के पात्र या आश्रित होकर रोजगार की तलाश में न भटकें अपितु वे स्वयं रोजगार सृजित करके अन्यों को स्वास्थ्य, स्वावलम्बन व रोजगार दें, ऐसी श्रेष्ठ वैदिक ऋषि संस्कृति की गुरुकुलीय परम्परा की प्रतिष्ठापना का एक उच्च आदर्श पतंजलि विश्वविद्यालय के माध्यम से प्रस्तुत करना चाहते हैं।

—स्वामी रामदेव
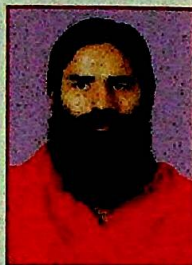
कुलपति का संदेश

शिक्षा एवं संस्कारों का नित्यप्रति हो रहा अवमूल्यन किसी भी सभ्य समाज के लिए शुभ नहीं कहा जा सकता। गिरते हुए शिक्षा व संस्कारों के स्तर को उन्नत बनाकर हम शिक्षा के क्षेत्र में एक अभिनव क्रान्ति लाना चाहते हैं। हम पढ़े लिखे सभ्य बेरोजगारों की संख्या में अभिवृद्धि न करके ऐसे युवक व युवतियों को तैयार करना चाहते हैं, जो शिक्षा के साथ-साथ समाज एवं राष्ट्र में एक अभिनव क्रान्ति लेकर आएं एवं राष्ट्र के विकास में अपना महत्त्वपूर्ण सहयोग दें।

हम बीमारियों की बेड़ियों में जकड़े राष्ट्र को स्वास्थ्य के क्षेत्र में स्वावलम्बी बनाकर बीमारियों के उपचार के नाम पर हो रहे अत्याचार व लूट से देश के लोगों को बचाकर, उनको सम्पूर्ण आरोग्य देकर, उनकी स्वास्थ्य रक्षा के साथ-साथ स्वास्थ्य सेवाओं के नाम पर खर्च हो रहे लाखों-करोड़ों रुपये की आर्थिक बर्बादी को भी रोकना चाहते हैं। योग, आयुर्वेद हमारी सस्ती, सरल, सहज, शाश्वत, वैज्ञानिक, निर्दोष व सम्पूर्ण चिकित्सा विधाएँ हैं। हम योग व आयुर्वेद को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति के रूप में प्रतिष्ठापित करना चाहते हैं और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए हम योग व आयुर्वेद के श्रेष्ठ विद्वान आचार्यों का निर्माण अपने पतंजलि विश्वविद्यालय में करना चाहते हैं। पतंजलि विश्वविद्यालय के माध्यम से हम शिक्षा व स्वास्थ्य के क्षेत्र में एक नूतन क्रान्ति कर, एक नए युग का निर्माण करना चाहते हैं।

हम ऐसे स्नातक तैयार करना चाहते हैं, जो स्वयं तो जीवन में आत्मनिर्भर बनें ही, साथ में अन्यों के लिए भी स्वास्थ्य के क्षेत्र में रोजगार व स्वावलम्बन की नई संभावनाएं पैदा करें और देश की बीमारी, बेरोजगारी, गरीबी, भूख व अभाव को दूर कर एक स्वस्थ, समर्थ, समृद्ध व संस्कारवान भारत बनाने की दिशा में अपना महत्वपूर्ण योगदान दें।

यह विश्वविद्यालय योग, स्वास्थ्य, संस्कृति, पर्यटन, विज्ञान, प्रौद्योगिकी तथा पंचकर्म आदि के क्षेत्र में विश्व में अग्रणी संस्था बनेगा, ऐसा हमारा संकल्प है। विश्वविद्यालय का पाठ्यक्रम योग की वैज्ञानिकता के साथ आयुर्वेद, प्राकृतिक चिकित्सा एवं अन्य परम्परागत चिकित्सा पद्धतियों के समन्वय से एक संयुक्त चिकित्सा पद्धति को विकसित कर छात्र/ छात्राओं को पूर्णत: आत्मनिर्भर बनाएगा, ऐसी हम आशा करते हैं। ज्ञान विज्ञान, परा व अपरा-विधाओं की हमारी समृद्ध शाश्वत वैदिक परम्परा रही है। विश्वविद्यालय में हमने प्रथम योग व आयुर्वेद पर आधारित पाठ्यक्रय तैयार कर डिप्लोमा व डिग्री देने की व्यवस्था की तथा सत्र 2010-11 से स्नातक (योग सहित) व एम.ए/ एम.एस.सी. (योग विज्ञान) में स्नातकोत्तर डिग्री आरंभ हो चुकी है तथा इस वर्ष से एम.ए. मनोविज्ञान का पाठ्यक्रम प्रारम्भ हो रहा है। कालान्तर में आवश्यकतानुसार नए पाठ्यक्रम सम्मिलित करने हेतु हमारे द्वार खुले हुए हैं। अंत में विद्यार्थियों के उज़्ज़वल भविष्य हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

—आचार्य बालकृष्ण

पतंजलि विश्वविद्यालय के उद्देश्य

जिन उद्देश्यों के लिए पतंजलि विश्वविद्यालय की स्थापना की गयी है वे निम्नलिखित हैं —

1. प्राचीन ऋषियों-महर्षियों द्वारा निर्दिष्ट मौलिक तत्वज्ञान को आधुनिक वैज्ञानिक प्ररिप्रेक्ष्य में व्यापक अध्ययन-शिक्षण एवं गहन शोध के लिए सुव्यवस्थित तथा विश्वस्तर का शिक्षण स्थापित करना।

2. राष्ट्रधर्म, स्वदेश प्रेम, स्वदेशी खानपान, आहार-सुचिता, जड़ीबूटी तथा आयुर्वेद के संरक्षण एवं संबर्धन के विषय में युवाओं को जागृत करके रोजगार परक शिक्षा उपलब्ध कराना।

3. योग, आयुर्वेद सहित वेद वेदांग आदि सभी प्राचीन विधाओं पर आधारित स्नातक तथा स्नातकोत्तर पाठ्यक्रम प्रदान करना। इसके साथ ही विश्वविद्यालय के उद्देश्य की पूर्ति के लिए कम अवधि के पाठ्यक्रम तथा डिप्लोमा और प्रमाण-पत्र पाठ्यक्रम प्रारम्भ करना।

4. भारतीय संस्कृति, योग तथा आयुर्वेद के क्षेत्र में अनुसंधान तथा नवीन परिवर्तनों को प्रोत्साहित करने के लिये शोध केन्द्र तथा विकास केन्द्र स्थापित करना तथा उनके द्वारा —

   (अ) ज्ञान की ऐसी सम्बन्धित शाखाओं में शिक्षण एवं प्रशिक्षण की व्यवस्था करना, जिन्हें वह आवश्यक समझें।

   (ब) विद्यालयों में ज्ञान के प्रचार के लिये शोध कार्य की व्यवस्था करना जिससे विश्व पटल पर उन विधाओं (शोध कार्य) को स्थापित किया जा सके तथा छात्र/ छात्राओं को रोजगार भी सहज उपलब्ध हो सके।

   (स) योग, आयुर्वेद सम्बन्धी अध्ययन और ऐसी अन्य गतिविधियाँ प्रारम्भ करना जिससे सामान्य जन को योग और आयुर्वेद का लाभ मिल सके जिससे रोग मुक्त, स्वस्थ एवं समृद्ध समाज का निर्माण हो सके और राष्ट्र की सोच को विकसित किया जा सके।

   (द) युवाओं को मानसिक व शारीरिक स्वास्थ्य के साथ-साथ उनका व्यक्तित्व विकास करना।

योग व आयुर्वेद-परक ज्ञान पर हमारी मुख्य कार्ययोजना

(क) वर्तमान समय में बढ़ते हुए प्रदूषण, तनाव, अस्त-व्यस्त जीवन शैली व शारीरिक श्रम के अभाव से करोड़ों देशवासी व विश्व समुदाय के लोग एक गहरे स्वास्थ्य संकट से गुजर रहे हैं। जीवन के मूल स्रोत- आहार, वायु व पानी अत्यधिक जहरीले हो गए हैं। अतः कैंसर, टीबी, दमा, एलर्जी, मोटापा, मधुमेह, हृदयरोग व उच्च रक्तचाप आदि खतरनाक रोगों से करोड़ों लोगों के लिए जीवन का संकट उपस्थित हो गया है। सब प्रकार की उपचार पद्धतियाँ, आंशिक रूप से ही लोगों के उपचार में सफल हो पायी हैं। अतः हम पूरे विश्व को चिकित्सा का एक सस्ता, सरल, सहज, वैज्ञानिक व प्रभावशाली विकल्प देना चाहते हैं और वह है योग व आयुर्वेद। योग व आयुर्वेद की शिक्षा पर आधारित उच्चस्तरीय पाठ्यक्रम तैयार करके ऐसी प्रतिभाएं देश व विश्व समुदाय को

देना जो दुनिया को स्वास्थ्य व संस्कारों के संकट से बाहर कर एक स्वस्थ, समृद्ध, संस्कारवान व सुखी विश्व का निर्माण कर सकें।

(ख) योग व आयुर्वेद आधारित सर्टिफिकेट, डिप्लोमा स्नातक डिग्री, स्नातकोत्तर डिग्री व उच्चतम आधुनिक वैज्ञानिक अनुसंधान की सुविधाएं उपलब्ध कराना।

(ग) योग व आयुर्वेद परक प्राचीन ऋषि परम्परा से प्राप्त ज्ञान की शिक्षा तो हम अपने विद्यार्थियों को देंगे ही, साथ ही उनको आधुनिकतम विज्ञान की अनुसंधानाशालाओं में वैदिकज्ञान को विज्ञान के आलोक में परखकर उसकी प्रामाणिकता व वैज्ञानिकता के प्रति विश्वस्त करके एक नई चिकित्सा व्यवस्था की प्रतिष्ठापना के लिए तैयार करेंगे।

(घ) हमारे विद्यार्थियों को रोजगार के लिए भटकना नहीं पड़ेगा। प्रथम तो उनके अध्ययनकाल में देश व दुनिया में श्रेष्ठ शिक्षा व स्वास्थ्य संस्थानों में उनकी नियुक्ति के लिए हम एक राष्ट्र व विश्वव्यापी कार्ययोजना तैयार करेंगे; दूसरा हमारे विद्यार्थी स्वयं में एक संस्थान होंगें। योग व आयुर्वेद को राष्ट्रीय चिकित्सा पद्धति के रूप में प्रतिष्ठापित करने हेतु एक व्यापक कार्ययोजना व संकल्पना के लिए काम करेंगे। इसके लिए उनके सामने कई विकल्प खुले होंगे।

(ङ) हमारे स्नातकों के भविष्य को लेकर हमारी कार्ययोजनाएं–

(अ) देश व विश्व की शिक्षा व स्वास्थ्य संस्थाओं में नोकरियों के लिए एक बहुत बड़ा स्वरूप तैयार करना।

(ब) पतंजलि योगपीठ द्वारा संचालित पतंजलि चिकित्सालयों में पंचकर्म, षट्कर्म व आयुर्वेद की सेवाओं का व्यापक विस्तार करके उनमें वैद्यों व योगाचार्यों की नियुक्तियाँ करना।

(स) हम अपने विद्यार्थियों को इस प्रकार शिक्षित व दीक्षित करेंगे कि वे दूसरों के द्वारा सृजित रोजगारों में आजीविका कमाने की बजाय स्वयं योग व आयुर्वेद के क्षेत्र में स्वास्थ्य सेवाओं के नए संस्थान या केन्द्र खोलकर अपने साथ दूसरों के लिए भी रोजगार के नए अवसर पैदा करेंगे ओर इस प्रक्रिया में पतंजलि योगपीठ उनको स्वावलम्बी बनाने में सहयोग करेगा। हमारे सामने रोजगार कोई बड़ा प्रश्न नहीं है। हमारे सामने चुनौती है देश के करोड़ों लोगों को अच्छा स्वास्थ्य उपलब्ध कराना। हम अपने विद्यार्थियों के लिए स्वावलम्बन के साथ-साथ देश को स्वास्थ्य के क्षेत्र में स्वावलम्बी या आत्मनिर्भर बनायेंगे और करोड़ों देशवासियों को आरोग्य का एक श्रेष्ठतम विकल्प उपलब्ध करायेंगे।

पतंजलि विश्वविद्यालय की विशेषताएँ
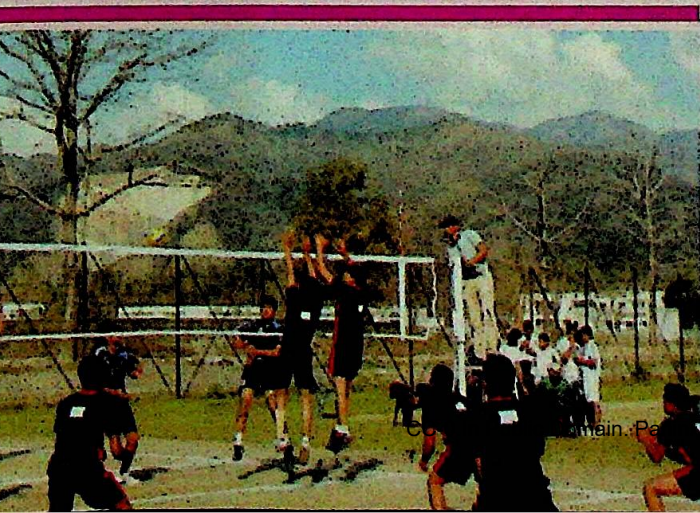
- पतंजलि विश्वविद्यालय ऋषि-मुनियों एवं साधकों की तपस्थली तथा सभ्यता व संस्कृति की उद्गमस्थली हरिद्वार की पूण्य भूमि पर शहर के प्रदूषण एवं कोलाहल से मुक्त प्रकृति की गोद में अवस्थित है। यहां रहकर छात्र/छात्राएं सौहार्दयुक्त परिवेश में अपना सर्वांगीण विकास कर सकते हैं।
- इस समय विश्वविद्यालय में मुख्य रूप से योग व आयुर्वेद की शिक्षा की व्यवस्था है। यहां शिक्षा के साथ-साथ योग साधना, संयम, सदाचार, शाकाहार, संस्कृति तथा संस्कारों पर विशेष ध्यान दिया जाता है।
- आयुर्वेद में अध्ययनरत छात्र/छात्राओं की पृष्ठभूमि विज्ञान की होती है जबकि आयुर्वेद में चरक, सुश्रुत, धनवन्तरि तथा आयुर्वेद के अन्य ग्रन्थों का ज्ञान एवं परम्परा संस्कृत भाषा में हैं। इन ग्रन्थों को तब तक नहीं समझा जा सकता जब तक छात्र-छात्राओं को संस्कृत भाषा का ज्ञान न हो। पतंजलि विश्वविद्यालय में अध्ययनरतन छात्र-छात्राओं को संस्कृत के अध्यापन की विशेष व्यवस्था की गयी है।
- विश्वविद्यालय के प्राध्यापक व व्यवस्थापक योग्य, कार्य-कुशल, निर्व्यसनी, समाज, राष्ट्र, संस्कृति व मानवता के प्रति समर्पित है।
- विश्वविद्यालय में 15 राज्यों के छात्र/ छात्राएं अध्ययनरत हैं। वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना के अनुरूप छात्र/ छात्राओं का संरक्षण तथा संवर्धन जाति (वर्ग), भाषा, प्रान्त, मत आदि के भेदभाव के बिना किया जाता है।
- छात्र/छात्राओं में अपनी सभ्यता, संस्कृति, राष्ट्र व मानवता के प्रति निष्ठा तथा कर्तव्यबोध विकसित करने का प्रयास किया जाता है।
- विश्वविद्यालय में गुरुकुलीय परम्परा के अनुरूप शिक्षक तथा विद्यार्थियों में गुरु शिष्य के पवित्र तथा आत्मीय संबंध विकसित करने का प्रयत्न किया जाता है। शिक्षक छात्र/छात्राओं को मात-पिता तुल्य स्नेह देते हुए उनके कल्याण के लिये सर्वदा प्रयत्नशील रहते हैं। छात्र/ छात्राएं भी शिक्षकों को पूरा सम्मान देते है।
- छात्र/छात्राओं में सेवा-भाव, कार्य-कुशलता, कर्मठता और स्वावलम्बन आदि गुणों के विकास के लिए सेवा-प्रकल्पों की व्यवस्था की गयी है। इसमें छात्र/छात्राओं द्वारा सफाई, बागबानी, आस-पास के क्षेत्र में जाकर शिविर आयोजन के द्वारा जनसेवा आदि के कार्य सम्पादित किये जाते हैं।

पतंजलि विश्वविद्यालय का परिसर

पतंजलि विश्वविद्यालय का स्थायी परिसर निमार्णाधीन है। वर्तमान में इसका शिविर कार्यालय पतंजलि योगपीठ में स्थित है, पतंजलि योग पीठ दिल्ली-हरिद्वार राष्ट्रीय राजमार्ग पर हरिद्वार से 17 किमी. दक्षिण में तथा रुड़की से 13 किमी. उत्तर में स्थित है।

- विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को शुद्ध, पौष्टिक व ऋतु के अनुकूल भोजन दिया जाता है। विविध पर्वों तथा अवसरों पर अवसर के अनुरूप भोजन तथा फलाहार की भी व्यवस्था की जाती है। विद्यार्थियों के निवास हेतु छात्रावास की सुविधा उपलब्ध है। छात्र/छात्राओं को अलग-अलग छात्रावासों में उनकी योग्यता के अनुसार रहने की सुविधा प्रदान की जाती है।

- पतंजलि विश्वविद्यालय में विद्यार्थियों को प्रतिदिन योगासन, प्राणायाम तथा ध्यान आदि का अभ्यास कराया जाता है जिससे वे स्वस्थ तथा प्रसन्न रहते हैं। यदि कोई छात्र/छात्रा यदा कदा रोगग्रस्त होता है तो पतंजलि योगपीठ परिसर में स्थित ओ०पी०डी०, आई०पी०डी० में उनकी चिकित्सा की समुचित व्यवस्था की गयी है। इसके अतिरिक्त पतंजलि योगपीठ परिसर में पंचकर्म व षट्कर्म सहित अत्याधुनिक मशीनों से युक्त पैथोलॉजी, रेडियोलॉजी, कार्डियोलॉजी आदि में सभी प्रकार के चिकित्सीय परीक्षणों की सुविधाएं उपलब्ध हैं। विश्वविद्यालय में प्राचीन आर्य साहित्य तथा आधुनिक विज्ञान और तकनीक की पुस्तकों से सुसज्जित पुस्तकालय है जिसमें 20,000 पुस्तकें उपलब्ध हैं। वाचनालय में विभिन्न समाचार-पत्र, पत्रिकाएं भी मंगायी जाती हैं। पुस्तकालय में इन्टरनेट की सुविधा भी उपलब्ध है। छात्र/छात्राओं को यथासंभव ऋण के रूप में भी पुस्तकें प्रदान करायी जाती हैं।

- विश्वविद्यालय में सामाजिक राष्ट्रीय उत्सवों यथा होली, दीपावली, मकर- संक्रान्ति, रक्षाबंधन स्वतन्त्रता दिवस, गणतंत्र दिवस आदि को पूर्ण उल्लास से मनाया जाता है। छात्र/ छात्राओं को 16 संस्कारों का व्यावहारिक ज्ञान कराने का प्रयत्न किया जाता है। प्रवेश में निर्धन व मेधावी छात्रों को वरीयता प्रदान की जाती है तथा उनकी यथासंभव प्रकार से सहायता करने का प्रयत्न किया जाता है। छात्र-छात्राओं को विशेषज्ञों द्वारा संस्कृत संभाषण का विशेष अभ्यास कराया जाता है।

- छात्र/छात्राओं में ज्ञान- वर्द्धन तथा अपनी सभ्यता- संस्कृति तथा इतिहास आदि का ज्ञान, निष्ठा व आत्म गौरव जागृत करने के उद्देश्य से विविध धार्मिक स्थलों, शैक्षणिक, ऐतिहासिक, प्रौद्योगिकी सम्बन्धी संस्थानों का परिभ्रमण भी कराया जाता है।

- योगर्षि स्वामी रामदेव जी महाराज के निदेशन में देश के शीर्ष साधु- सन्तों, विद्वानों, बुद्धिजीवियों द्वारा छात्र/छात्राओं को विशेष प्रबोधन की व्यवस्था की गयी है।

- पतंजलि विश्वविद्यालय में दैनिक प्रयोग की वस्तुओं को विश्वविद्यालय के विक्रय केन्द्र से क्रय किया जा सकता है। परिसर में पंजाब नेशनल बैंक और भारतीय स्टेट बैंक व भारतीय डाक सेवाएं की शाखायें भी स्थित है। जहां ए०टी०एम० की सुविधा भी उपलब्ध है। छात्र/छात्राओं, अभिभावकों तथा आगन्तुकों की सुविधा के लिए परिसर में ही ट्रैवल ऐजेण्ट का कार्यालय स्थित है।

पाठ्यक्रम का विवरण

- **बी०ए०** योग विज्ञान के साथ
- **एम०ए०/एम०एस–सी०** योग विज्ञान के साथ
- **एम०ए०** मनोविज्ञान
- पंचकर्म में **स्नातकोत्तर डिप्लोमा**
- योग विज्ञान में **स्नातकोत्तर डिप्लोमा**
- योग स्वास्थ्य एवं सांस्कृतिक पर्यटन में **स्नातकोत्तर डिप्लोमा**
- योग विज्ञान में **पीएच.डी.**

- **B.A.** WITH YOG SCIENCE
- **M.A./M.Sc.** IN YOG SCIENCE
- **M.A.** IN PSYCHOLOGY
- **PG DIPLOMA** IN PANCHKARMA
- **PG DIPLOMA** IN YOG SCIENCE
- **PG DIPLOMA** IN YOG, HEALTH AND CULTURAL TOURISM.
- **Ph.D.** IN YOG SCIENCE

प्रवेश के नियम

बी.ए. (योग विज्ञान के साथ)

अवधि : तीन वर्ष (छः सेमेस्टर)

प्रवेश अर्हता : प्रार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त बोर्ड से 10+2 में कम से कम 45% अंकों के साथ उत्तीर्ण हो।

प्रवेश : प्रवेश श्रेष्ठता व साक्षात्कार के आधार पर होगा (90:10)।

अधिकतम आयु : 31 जुलाई, 2013 को 25 वर्ष।

शुल्क : वार्षिक शिक्षण शुल्क 15,000/– रुपये है, जिसका 50% प्रत्येक सेमेस्टर के प्रारम्भ में एकमुश्त देय है।

अध्ययन के विषय

1. योग विज्ञान (सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक)
2. सांस्कृतिक पर्यटन
3. मनोविज्ञान (सैद्धान्तिक एवं प्रयोगात्मक)
4. दर्शन शास्त्र
5. संस्कृत

एम.ए. (योग विज्ञान/मनोविज्ञान)

अवधि : दो वर्ष (चार सेमेस्टर)

प्रवेश अर्हता : प्रार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से 10+2+3 में कम से कम 45% अंकों के साथ उत्तीर्ण हो।

प्रवेश : प्रवेश श्रेष्ठता व साक्षात्कार के आधार पर होगा (90:10)।

अधिकतम आयु : 31 जुलाई, 2013 को 30 वर्ष।

शुल्क : वार्षिक शिक्षण शुल्क 20000/– रुपये है, जिसका 50% प्रत्येक सेमेस्टर के प्रारम्भ में एकमुश्त देय है।

एम.एस.सी. (योग विज्ञान)

अवधि : दो वर्ष (चार सेमेस्टर)

प्रवेश अर्हता : प्रार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से 10+2+3 में कम से कम 45% अंकों के साथ उत्तीर्ण हो।

प्रवेश : प्रवेश श्रेष्ठता व साक्षात्कार के आधार पर होगा (90:10)।

अधिकतम आयु : 31 जुलाई, 2013 को 30 वर्ष।

शुल्क : वार्षिक शिक्षण शुल्क 20000/– रुपये है, जिसका 50% प्रत्येक सेमेस्टर के प्रारम्भ में एकमुश्त देय है।

पंचकर्म में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

अवधि : एक वर्ष (दो सेमेस्टर)

प्रवेश अर्हता : प्रार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से आयुर्वेद में स्नातक की उपाधि कम से कम 60% अंकों के साथ उत्तीर्ण की हो।

प्रवेश : प्रवेश श्रेष्ठता व साक्षात्कार के आधार पर होगा (90:10)।

अधिकतम आयु : 31 जुलाई, 2013 को 35 वर्ष।

शुल्क : वार्षिक शिक्षण शुल्क 35,000/- रुपये है, जिसका 50% प्रत्येक सेमेस्टर के प्रारम्भ में एकमुश्त देय है।

योग विज्ञान में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

अवधि : एक वर्ष (दो सेमेस्टर)

प्रवेश अर्हता : प्रार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से 10+2+3 में कम से कम 45% अंकों के साथ उत्तीर्ण हो।

प्रवेश : प्रवेश श्रेष्ठता व साक्षात्कार के आधार पर होगा (90:10)।

अधिकतम आयु : 31 जुलाई, 2013 को 35 वर्ष।

शुल्क : वार्षिक शिक्षण शुल्क 20,000/- रुपये है, जिसका 50% प्रत्येक सेमेस्टर के प्रारम्भ में एकमुश्त देय है।

योग स्वास्थ्य एवं सांस्कृतिक पर्यटन में स्नातकोत्तर डिप्लोमा

अवधि : एक वर्ष (दो सेमेस्टर)

प्रवेश अर्हता : प्रवेश अर्हता : प्रार्थी किसी भी मान्यता प्राप्त विश्वविद्यालय से 10+2+3 में कम से कम 45% अंकों के साथ उत्तीर्ण हो।

प्रवेश : प्रवेश श्रेष्ठता व साक्षात्कार के आधार पर होगा (90:10)।

अधिकतम आयु : 31 जुलाई, 2013 को 35 वर्ष।

शुल्क : वार्षिक शिक्षण शुल्क 20,000/- रुपये है, जिसका 50% प्रत्येक सेमेस्टर के प्रारम्भ में एकमुश्त देय है।

नोट :

सभी कक्षाओं में आरक्षित वर्ग के छात्रों के लिए प्रवेश अर्हता 40% मानी जायेगी जबकि पंचकर्म स्नातकोत्तर डिप्लोमा में प्रवेश अहर्ता 55% मानी जायेगी।

महत्वपूर्ण तिथियाँ :

1. आवेदन-पत्र प्राप्त करने की समयावधि – 15 जून से 31 जुलाई, 2013
2. आवेदन-पत्र के जमा करने की अंतिम तिथि – 31 जुलाई, 2013 (10 अगस्त, 2013 तक विलम्ब शुल्क के साथ)
3. साक्षात्कार की तिथि :
   क. स्नातक पाठ्यक्रम में प्रवेश हेतु – 07 एवं 08 अगस्त, 2013

ख. स्नातकोत्तर एवं स्नातकोत्तर डिप्लोमा के पाठ्यक्रम हेतु – 09 एवं 10 अगस्त, 2013

4. चयनित छात्र/छात्राओं का पंजीकरण – 10 अगस्त, 2013

5. कक्षारम्भ – 12 अगस्त, 2013 से

नोट :

1. समस्त पाठ्यक्रमों में कुल अधिकारिक सीटों के आलावा 6% सीटों पर चयन कुलपति के विवेकानुसार किया जायेगा।
2. हर सत्र में प्रायोगिक एवं क्रियात्मक आन्तरिक परीक्षा होगी और इस मध्य किसी भी छात्र/छात्रा को अवकाश देय नहीं है, बशर्ते कोई विशेष परिस्थिति न हो।
3. प्रत्येक विद्यार्थी को सैद्धान्तिक एवं प्रायोगिक कक्षाओं में 75% उपस्थिति आवश्यक है।
4. **ड्रेस कोड (वेशभूषा):** प्रत्येक छात्र/ छात्रा को विश्वविद्यालय द्वारा निर्धारित ड्रेस कोड का पालन करना होगा।
5. **छात्रावास :** छात्र/छात्राओं को छात्रावास में हर संभावित सुविधा प्रदान की जायेगी व भोजन की व्यवस्था रहेगी तथा उन्हें छात्रावास के नियमों का पालन करना होगा। छात्रावास का शुल्क निम्न प्रकार है—

आवास	–	1,000/– रुपये प्रति माह	तीन माह का एक साथ देय है
भोजन	–	1,800/– रुपये प्रति माह	

6. **परीक्षा शुल्क :** 600/– रुपये प्रति सेमेस्टर।
7. **सुरक्षा धनराशि :** 2,000/– रुपये (दो हजार रुपये मात्र), प्रथम प्रवेश के समय।

भुगतान कैसे करें :

सभी भुगतान बैंक ड्राफ्ट द्वारा मान्य होंगे जो कि **'पतंजलि विश्वविद्यालय'**, हरिद्वार के नाम देय होंगे।

प्रवेश सम्बन्धि विवरणिका कैसे प्राप्त करें :

विवरण पुस्तिका एवं आवेदन पत्र रुपये 100/– का बैंक ड्राफ्ट जो कि 'पतंजलि विश्वविद्यालय, हरिद्वार' के नाम देय हो, के भुगतान पर प्राप्त किया जा सकता है और डाक द्वारा मंगवाने पर 50/– रुपये डाक व्यय अतिरिक्त देय होगा। आवेदन पत्र मंगवाने व भरने की अंतिम तिथि 31 जुलाई, 2013 है। ड्राफ्ट के साथ स्वयं का लिखा हुआ पता, 11" x 9" एवं 10" x 4.5" का लिफाफा संलग्न करें एवं निम्न पते पर प्रेषित करें—

कुल सचिव
पतंजलि विश्वविद्यालय
पतंजलि योगपीठ, हरिद्वार–249405 (उत्तराखण्ड)
दूरभाष : 01334–242526
ई–मेल: info@universityofpatanjali.com
वेबसाइट : universityofpatanjali.com

MESSAGE FROM THE CHANCELLOR

India has been the leading country in the world in knowledge, wisdom, literature, music, art and culture from the very beginning. Philosopher Travellers/visitors from many countries visited India from time to time to gain knowledge of its religion, philosophy, literature, medicine, astronomy, astrology and mathematics from its sacred texts. Up to the 18th century India had been an ideal country of the world in educational, economic, social and spiritual field. In the 18th century, our partnership in the world market was 37% and our income was 27% of the total income of the world. The literacy in the country was 97% according to the famous German scholar Max Muller, English scholar W. Litner and the then British Government. The number of primary and secondary Gurukuls was 7 lac 32 thousand. The centres of higher learning were 14 thousand where 18 subjects including astronomy, astrophysics, physics, chemistry, geology, metallurgy, philosophy, surgery, medical science and management were taught.

The British rulers having a hidden agenda to keep us enslaved for centuries tried to destroy our rich and prestigious educational system totally. Today, there are 450 universities, 13 lac primary and secondary schools, 15 thousand colleges in the country.

Many institutes of international level in the field of science, management and technology exist in the country but we could not fully include our sacraments and culture in these institutions of high standard of education. We want to make our culture, sacraments, history, yoga, meditation, and morality (good conduct) a part and parcel of our educational system, for realizing the great potential of our children, and for developing in them a sense of pride for their sacraments and culture. We want to make the child a successful and ideal man of the world. Graduates of our institution shall be competent enough to create jobs for themselves as well as for others, and to make the society self-dependent in health-care. They shall be able to re-establish Vedic Rishi Culture (Gurukul System) of education. We want to establish a highly ideal educational system through the University of Patanjali.

–Swami Ramdev
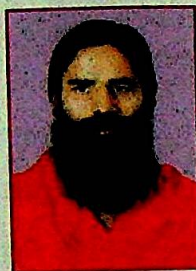
MESSAGE FROM THE VICE-CHANCELLOR

Day by day devaluation of our cultural values and educational system cannot be considered good. For finding a solution to this deplorable situation, we want to revolutionize the educational system. Instead of increasing the number of educated unemployed youths, we want to prepare such young men and women who, with their education, bring a revolution in the society and nation, and make their important contribution in the development of the nation.

The masses mired in sickness and disease are making the nation dependent in the matter of health-care. We want to save the people of the country from loot and atrocity in the name of treatment of diseases. We want to stop the economic misuse of lakhs and crores of rupees in the name of health services. Yoga and Ayurveda are our cheap, simple, easy, permanent, scientific, faultless and complete systems of treatment.

We want to establish Yoga and Ayurveda as our national system of treatment, and to fulfil this objective, we want to produce competent and proficient scholars of Yoga and Ayurveda in our University of Patanjali.

Through the University of Patanjali we want to create a new era by revolutionizing education and health-care. We want to produce such graduates who being self- dependent themselves shall create opportunities of employment and self-reliance for others in the field of health-care, and who shall make their important contribution in making India healthy, rich and cultured by removing sickness, unemployment, poverty, hunger and want. This university will be a leading institution in the world in the field of Yoga, health, culture, tourism, science, technology and panchkarma,-- this is our goal. The university will prove the scientific validity of Yoga, will co-ordinate Ayurveda, Naturopathy and other systems of ancient treatment, will develop a joint system of treatment, and will make the students self-reliant. Knowledge, wisdom, knowledge of the Supreme Soul and knowledge of materialism are our rich, perennial Vedic heritage. In the first instance arrangements have been made to provide diploma courses based on Yoga and Panchkarma. From the academic session 2010-11, B.A., M.A., M.Sc. in Yoga were started. M.A. Psychology is starting wef 2013-14. Other courses will also be introduced in due course of time. My good wishes for the bright future of students.

–Acharya Balkrishna

RULES FOR ADMISSION

B.A. (YOG SCIENCE)

Duration : Three Years (Six Semesters)

Admission Criteria : The candidate must have passed 10+2 Examination from a recognized Board with at least 45% marks. The admission will be done on Merit basis and Interview (90:10).

Age Limit : 25 Years as on 31st July, 2013.

Fee : The Annual Tuition Fee will be Rs. 15,000/- and its 50% will be payable in each Semester at a time.

Subjects of Study :

1. Yoga Science (Theory & Practical)
2. Cultural Tourism
3. Psychology (Theory & Practical)
4. Philosophy
5. Sanskrit

M.A. (YOGA SCIENCE/PSHYCHOLOGY)

Duration : Two Years (Four Semesters)

Admission Criteria : The Candidate must have passed a Bachelor Degree (10+2+3) from a recognized University with a minimum of 45% marks. The Admission will be done on the basis of Merit and Interview (90:10).

Age Limit : 30 Years as on 31st July, 2013.

Fee : The Annual Tuition fee will be Rs. 20,000/- and its 50% will be payable in each Semester at a time.

M.Sc. (YOG SCIENCE)

Duration : Two Years (Four Semesters)

Admission Criteria : The candidate must have passed a Bachelor Degree in Science (10+2+3) from a recognized University with a minimum of 45% marks. The Admission will be done on the basis of Merit and Interview (90:10).

Age Limit : 30 Years as on 31st July, 2013.

Fee : The Annual Tuition fee will be Rs. 20,000/- and its 50% will be payable in each Semester at a time.

POST GRADUATE DIPLOMA IN PANCHKARMA

Duration : One Year (Two Semesters)

Admission Criteria : The candidate must have passed Bachelor Degree in Ayurveda Medical Science with at least 60% marks from a recognized University. The Admission will be done on the basis of Merit and Interview (90:10).

Age Limit : 35 Years as on 31st July, 2013.

Fee : The Annual Tuition fee will be Rs. 35000/- and its 50% will be payable in each Semester at a time.

POST GRADUATE DIPLOMA IN YOGA SCIENCE

Duration : One Year (Two Semesters)

Admission Criteria : The candidate must have passed Bachelor Degree (10+2+3) with atleast 45% marks from a recognized University. The Admission will be done on the basis of Merit and Interview (90:10).

Age Limit : 35 Years as on 31st July, 2013.

Fee : The Annual Tuition fee will be Rs. 20000/- and its 50% will be payable in each Semester at a time.

POST GRADUATE DIPLOMA IN YOGA HEALTH AND CULTURAL TURISM

Duration : One year (Two Semesters)

Admission Criteria : The candidate must have passed Bachelor Degree (10+2+3) from a recognized University with at least 45% marks. The Admission will be done on the basis of Merit and Interview (90:10).

Age Limit : 35 years as on 31st July, 2013.

Fee : The annual tuition fee will be Rs. 20,000/- and its 50% will be payable in each semester at a time.

Note :

The Minimum Marks for reserved candidates will be 40% of the aggregate marks while it will be 55% for PG Diploma in Panchkarma.

Important Dates :

(1) Availability of Admission Forms : 15 June to 31 July, 2013

(2) Last date for submission the Admission Forms : 31 July, 2013 (upto 10 Aug., 2013 with late fee)

(3) Dates of Interview :

- a. For admission in Graduate courses : 07 & 08 August, 2013
- b. For admission in Post-graduate & Post-graduate diploma courses : 09 & 10 August, 2013

(4) Admission of Selected Candidates : 10 August, 2013

(5) Commencement of academic session : 12 August, 2013

Note :

1. Filling up of 6% of seats over and above the authorised seats in each course will be the discretion of the Hon'ble Vice-Chancellor.
2. There will be an Internal Examination (both in Theory and Practical) in each semester and during the examination, no candidate will be given leave except on compassionate grounds.
3. 75% attendance is essential to sit in the examinations.
4. **Dress Code :** Every student have to follow the dress code strictly as decided by the University.
5. **Hostel :** The Students will be provided the possible facility of a Hostel where meals will be available and the students will abide by the Hostel Rules. The Hostel Charges will be as Under:

   Boarding : Rs. 1,000/- per month
   Meals : Rs. 1,800/- per month } 3 months payment at a time.
6. **Examination Fee :** Rs. 600/- per semester.
7. **Caution Money :** Rs. 2.000/- (Rupees Two Thousand only) at the time of first admission.

How to Pay :

All payments will be made by Bank Draft payable to the University of Patanjali, at Haridwar.

How to get Form and Prospectus for Admission :

Application form and prospectus can be received by depositing a Bank Draft of Rs. 100/- payable to "University of Patanjali, Haridwar" (Demand by post Rs. 50/- extra as postal charges). Last date for receiving prospectus is 31st July, 2013. Send a self-addressed envelope of 11" x 9" and 10"x4.5" with draft. The last date for submitting the filled form is 31st July, 2013. The address of receiving and depositing a form is:

Registrar
University of Patanjali,
Haridwar-249405, Uttarakhand
Phone: 01334-242526,
E-mail: info@universityofpatanjali.com
Website : universityofpatanjali.com